स्टोन सूप

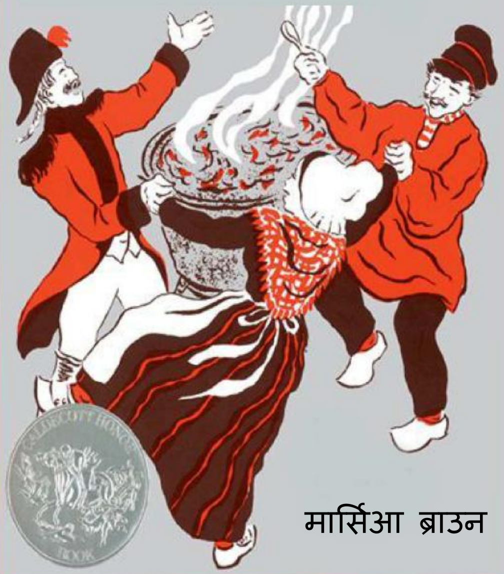

मार्सिआ ब्राउन

स्टोन सूप

मार्सिआ ब्राउन

स्टोन सूप

मार्सिआ ब्राउन

एक पराये देश में तीन सैनिक पैर घसीटते हुए सड़क पर चल रहे थे.

वह युद्ध से वापस अपने घर की ओर जा रहे थे.

वह बहुत थके हुए थे और बहुत भूखे थे

क्योंकि दो दिनों से उन्होंने कुछ खाया नहीं था.

“आज रात खाने में कुछ स्वादिष्ट भोजन मिल जाए तो कितना अच्छा लगेगा,” एक सिपाही ने कहा.

“और सोने के लिए बिस्तर,” दूसरे ने कहा.

“लेकिन यह सब असंभव है,” तीसरे ने कहा. “हमें चलते रहना होगा.”

वह चलते रहे. और अचानक अपने आगे उन्हें एक गाँव की रोशनियाँ दिखाई दीं.

“शायद यहाँ पर खाने के लिए हमें कुछ मिल जाए,” पहले ने कहा.

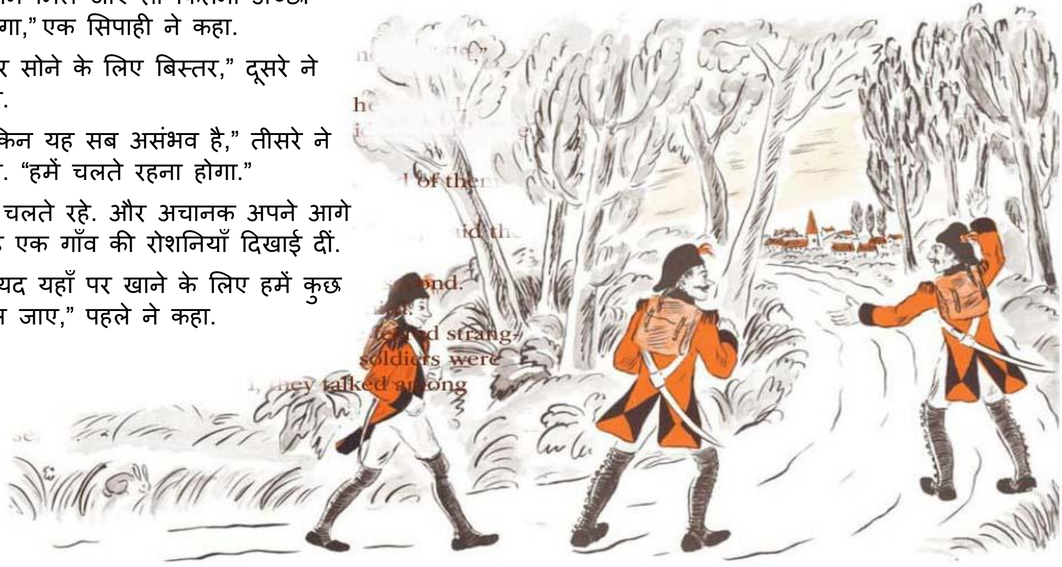

“और सोने के लिए एक अटारी,” दूसरे ने कहा.

“पूछने में कोई हानि नहीं है,” तीसरे ने कहा.

उस गाँव के लोग अजनबियों से डरते थे. जब उन्हें पता चला कि तीन सैनिक उनके गाँव की ओर आ रहे थे तो उन्होंने आपस में बातचीत की.

“तीन सैनिक आ रहे हैं. सैनिक हमेशा भूखे होते हैं.
लेकिन हमारे पास अपने लिए ही पर्याप्त भोजन नहीं है.”

और वह झटपट खाने की सारी वस्तुओं को छिपाने लगे.

जौ की बोरियों को उन्होंने अटारियों में घास-फूस के नीचे छिपा दिया.

दूध से भरी बाल्टियाँ उन्होंने कुंओं में लटका कर छिपा दीं.

जिन डिब्बों में गाजरें रखी थीं उन डिब्बों को रज़ाइयों से ढक कर छुपा दिया.

गोभी और आलू उन्होंने बिस्तरों के नीचे छिपा दिए.

मांस को उन्होंने तहखानों में लटका दिया.

खाने का जो कुछ सामान भी उनके पास था उसे उन्होंने छिपा कर रख दिया.

फिर वह प्रतीक्षा करने लगे.

सैनिक सबसे पहले पॉल और फ्रांसुआ के घर पर रुके.

"शुभ संध्या," सैनिकों ने कहा, "क्या आप तीन भूखे सैनिकों को थोड़ा सा भोजन दे पाएंगे?"

"तीन दिन से तो हमने भी कुछ नहीं खाया है," पॉल ने कहा. फ्रांसुआ ने अपना चेहरा लटका लिया.

"इस बार उपज बहुत ही कम हुई है."

तीनों सैनिक अलबर्ट और लूई के घर आए.

"क्या आप थोड़ा सा खाना हमें दे सकते हैं? और क्या आप के पास कोई ऐसी जगह है जहाँ हम रात भर सो पाएं?"

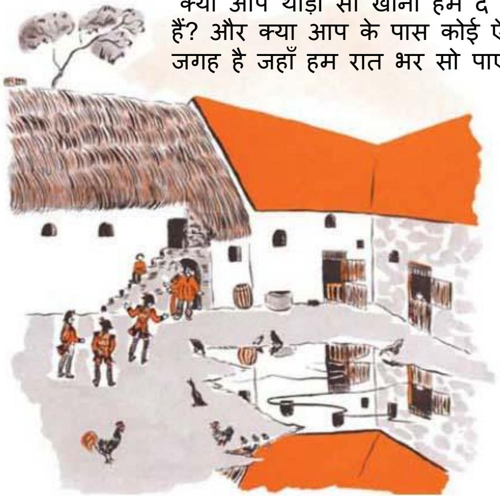

"ओह, नहीं," अलबर्ट ने कहा. "जो भी खाना हम दे सकते थे हमने उन सैनिकों को दे दिया है जो आप से पहले आए थे."

"हमारा कोई भी बिस्तर खाली नहीं है," लूई ने कहा.

विन्सैंट और मैरी के घर पर भी वैसा ही उत्तर सुनने को मिला.

उपज खराब थी और जो अनाज बचा हुआ था वह बीज के रुप में इस्तेमाल किया जाएगा.

सारे गाँव में ऐसी बातें ही सुनने को मिलीं. एक भी किसान के पास उन्हें देने के लिए कोई खाना नहीं था.

सबके पास कोई न कोई कारण था.

एक परिवार ने बचा हुआ अनाज पशुओं को खिला दिया था.

दूसरे परिवार को अपने बूढ़े पिता की देखभाल करनी थी. हर एक के घर में खाने वालों की संख्या अधिक थी और खाना कम.

गाँव वाले रास्ते पर खड़े हो गए और
आह भरने लगे.
वह जितने भूखे दिखाई दे सकते थे
उतने भूखे दिखाई दे रहे थे.
तीनों सैनिकों ने आपस में कुछ बात की.

फिर पहले सैनिक ने कहा, “भले लोगो!”
किसान निकट आ गए.

“हम एक अंजान देश में तीन भूखे सैनिक हैं.
हम ने आपसे खाने के लिए कुछ मांगा था.
लेकिन आपके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है.
इस स्थिति में हमें पत्थरों का सूप ही बनाना पड़ेगा.”

किसान आश्चर्य से उन्हें देखने लगे.
पत्थरों का सूप?
इसकी जानकारी तो लेनी पड़ेगी.

“सर्वप्रथम हमें लोहे का एक बड़ा बर्तन चाहिए,” सैनिकों ने कहा.

किसानों को जो सबसे बड़ा बर्तन गाँव में मिला वह ले आए. इसके बिना ज़्यादा खाना कैसे बनता?

“यह बहुत बड़ा नहीं है,” सैनिकों ने कहा, “लेकिन इससे काम चल जाएगा. और इसे भरने के लिए पानी और गर्म करने के लिए आग चाहिए.”

बर्तन को भरने के लिए कई बाल्टियाँ पानी डालना पड़ा.

गाँव के चौराहे में आग जला कर

बर्तन को उस पर रख दिया गया.

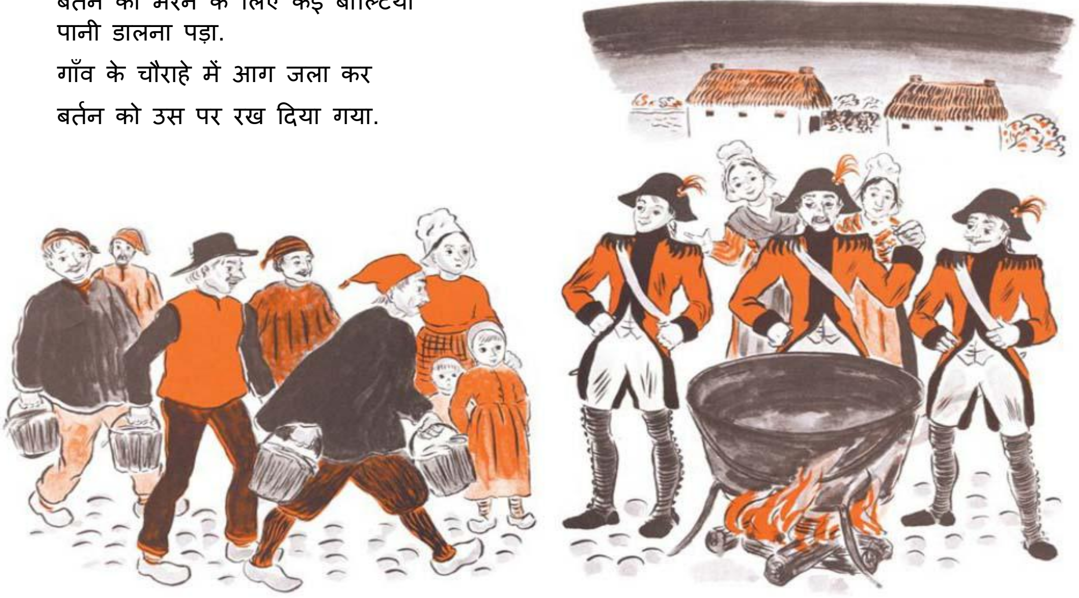

“और अब आप कृपया
तीन गोल, चिकने पत्थर ले आएं.”
पत्थर ढूँढा आसान था.
जब सैनिकों ने पत्थरों को बर्तन के अंदर
पानी में डाल दिया तो सभी
किसान आश्चर्य से देखते रह गए.

“किसी भी सूप में नमक और
काली मिर्च डालनी ही पड़ती है,”
पानी में पत्थरों को हिलाते हुए सैनिकों ने कहा.
नमक और काली मिर्च लाने के लिए बच्चे दौड़े गए.
“ऐसे पत्थरों से अच्छा सूप बनता है
लेकिन अगर इस में गाजरें डाल दी जाएं
तो सूप बढ़िया बनेगा.”

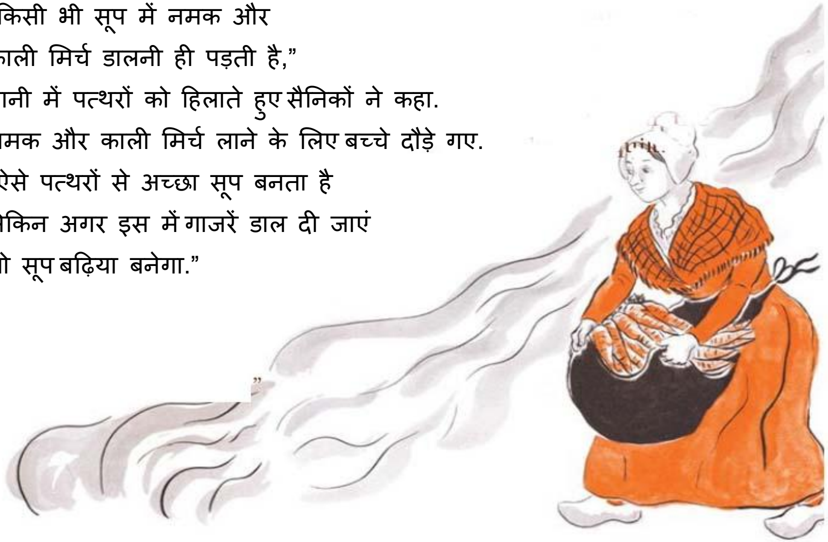

“अरे, मुझे लगता है कि घर में एक या दे गाजरें हैं,”
फ्रांसुआ ने कहा और घर की ओर दौड़ी.
लाल रंग की रज़ाई के नीचे छिपाए डिब्बे से वह बहुत सारी गाजरें अपने एप्रन में भरकर ले आई.

“पत्थर के अच्छे सूप में पत्तागोभी होनी चाहिए.”
बर्तन में कटी हुई गाजरें डालते हुए
सैनिकों ने कहा.
“लेकिन जो चीज़ आपके पास है ही
नहीं वह मांगना तो गलत होगा.”

“मुझे लगता है कि एक पत्तागोभी तो
कहीं न कहीं मिल ही जाएगी,”
मैरी ने कहा और वह झटपट घर की ओर चल दी.
बिस्तर के नीचे छिपाए डिब्बे से निकाल कर
वह तीन पत्तागोभी लेकर तुरंत लौट आई.

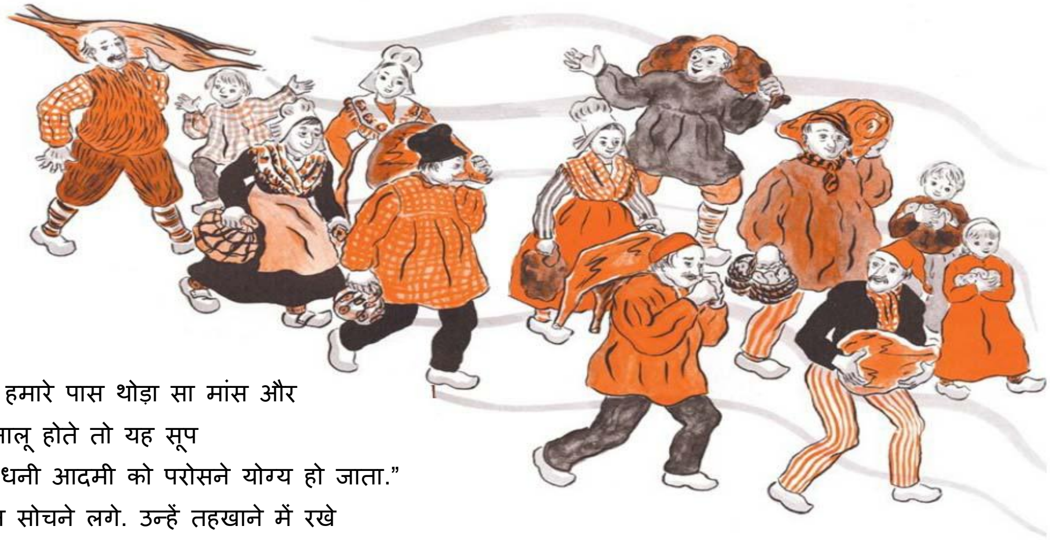

“अगर हमारे पास थोड़ा सा मांस और
कुछ आलू होते तो यह सूप
किसी धनी आदमी को परोसने योग्य हो जाता.”
किसान सोचने लगे. उन्हें तहखाने में रखे
आलू और मांस के टुकड़ों का ध्यान आया.
वह मांस और आलू लाने के लिए दौड़े.
ऐसा सूप जो किसी धनी को परोसने योग्य हो -
सिर्फ तीन पत्थरों से बना सूप. किसानों को यह जादू समान लगा.

“अह,” आलुओं और मांस को सूप में हिलाते हुए सैनिकों ने कहा, “अगर हमारे पास थोड़े से जौ और एक कप दूध होता तो यह सूप राजा को परोसने योग्य बनता.

वास्तव में जब पिछली बार हमने राजा के साथ भोजन किया था तब उन्होंने ऐसा ही सूप मांगा था.”

किसान एक-दूसरे को देखने लगे.

इन सैनिकों ने राजा के साथ भोजन किया था!

बहुत बढ़िया!

“लेकिन जो चीज़ आपके पास नहीं है वह मांगने से क्या लाभ होगा,” सैनिकों ने आह भरते हुए कहा.

अटारी में छिपा कर रखे जौ और कुएं में छिपाकर रखा दूध किसान ले आए. सैनिकों ने उबलते हुए सूप में दूध और जौ डाल कर सूप को हिलाया. किसान एकटक देखते रहे.

आखिरकार सूप बन कर तैयार हो गया.

“आप सब इसका स्वाद चखेंगे,” सैनिकों ने कहा.

“लेकिन पहले मेज़ पर सब सामान लगाना होगा.”

चौराहे में बड़े मेज़ लगा दिए गए.

उनके चारों ओर मशालें जला कर लगा दी गईं.

कितना बढ़िया सूप था. उसकी सुगंध
कितनी अच्छी थी. सच में सूप एक
राजा के योग्य ही था.

लेकिन तभी किसानों ने अपने आप से पूछा,
“क्या ऐसे सूप के साथ ब्रेड और
भूना हुआ मांस और सेब का सिरका नहीं होनी चाहिए?”

शीघ्र ही एक दावत का आयोजन हो गया और
हर कोई खाने के लिए बैठ गया.
ऐसी दावत आजतक न हुई थी.
आज तक किसानों ने ऐसा सूप न चखा था,
सूप जो पत्थरों से बना था.

उन्होंने खाया और पिया, और खाया और पिया.
और फिर उन्होंने नृत्य किया.

सब देर रात तक नाचते और गाते रहे.

वह सब थक गए. तब तीनों सैनिकों ने पूछा, “क्या यहाँ कोई ऐसी अटारी नहीं है जहाँ हम सो सकें?”

“क्या इतने समझदार और शानदार सज्जन लोग अटारी में सोयेंगे? निःसंदेह! उन्हें गांव के सबसे अच्छे बिस्तर मिलने चाहिए.”

तो एक सैनिक पादरी के घर में सोया.

दूसरा सैनिक नानबाई के घर में.

और तीसरा सैनिक मेयर के घर में सोया.

अगली सुबह उन सैनिकों को विदा करने के लिए गाँव के सब लोग चौराहे में इकट्ठे हुए.

“हमें कल जो आपने सिखाया उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद,” किसानों ने .

सैनिकों से कहा. “अब हम कभी भूखे नहीं रहेंगे. क्योंकि अब हमें पत्थरों का सूप बनाना जानते हैं.”

“ओह, यह जानकारी ही पर्याप्त है,”
सैनिकों ने कहा और वह तीनों अपने रास्ते चल दिए.